ISSN 2349-638x

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-XII DEC. 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

रामभक्ति–कबीर के राम और तुलसी के राम में अन्तर

प्रा.गुरव देवकांत फुलचंद
एम.जी.डी.महिला शिक्षणशास्त्र
महाविदयालय, सोलापूर

रामभक्त कवियों के उपास्यदेव राम विष्णु के अवतार हैं, और परम ब्रह्म स्वरूप हैं। वे पाप विनाश और धर्मोध्दार के लिए युग–युग में अवतार लेते हैं। कृष्ण कवियों के कृष्ण ब्रह्म के प्रतीक हैं। गोपियाँ जीवत्मा है ओर स्वयं कृष्ण–भक्त अपने आप पर गोपी का आरोप करके अपने आपको कृष्ण की सेवा में अर्पित करता है। किन्तु राम–भक्ति साहित्य में यह प्रतीकवाद नहीं है। राम विष्णु का अवतार हैं और भक्त कवि मानवरुप में उनका साधक है।

इनके राम में शील, शक्ति, सौदंर्य का समन्वय हैं। सौन्दर्य में वे त्रिभुवन को लजावन हारे हैं। शक्ति से वे दुष्टों का दलन करते हैं और भक्तों को संकट से मुक्त करते हैं वे अपने शील–गुण से लोगों को आचार की शिक्षा देते हैं। वे अपनी करुणमयता से पतितों और अधर्मियों का उध्दार करते हैं। वे अपनी करुणमयता से पतितों और अधर्मियों उध्दार करते है। उनका लोकरक्षक रुप प्रधान हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और आदर्श के प्रतिष्ठापक हैं।

कबीर के राम

कबीर के राम निर्गुण, निराकार, अजन्मा, अरुप, अलख, ब्रम्ह हैं। वे दशरथ के पुत्र नहीं हैं कबीर के राम तो घर–घर में व्याप्त हैं, सूक्ष्म तत्व है।

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना। राम नाम का मरम है आना।"

कबीर राम के निरंजन रूप को अपनाते हैं। ब्रह्म के लिए निरंजन और राम शब्द का प्रयोग गोरखनाथ एवं नामदेव ने किया था। कबीर ने निरंजन का प्रयोग अव्यक्त, उपाधिरहित, अनिर्वचनीय, गुणातीत स्वरूप के लिए किया । अंजन माया से उत्पन्न मलिनता हैं। समस्त सृष्टि इसी अंजन से आविर्भूत हुई हैं। सभी वस्तुओं मे यह अंजन व्याप्त हैं। केवल राम इस अंजन से परे हैं। इसलिए वे निरंजन हैं।

"राम निरंजन न्यारा रे, अंजन सकल पसारा रे।
कहै कबीर कोई बिरला जागै, अंजन छाड़ि निरंजन लागै।"

निरंजन में सभी देवताओं का समाहार हो जाता हैं। विष्णु, शिव, कृष्ण, राम अल्लाह सभी उसी निरंजन के भिन्न–भिन्न रूप हैं।

"अलह अलख निरंजन देव, किहि विधि करौं तुम्हारी सेवे।
विश्व सोई जाकौ विस्तार, सोई कृस्न जिनि कीयौ संसार।
अपरंपार का नांउ अनंत कहैं कबीर सोई भगवंत।"

निरंजन का वास शरीर रूपी गढ़ के भीतर है, उसे वही खोजना चाहिए।

"पूजा करूँ न निमाज गुजारूँ,एक निराकार हिरदै नमसकारूँ।"

कबीर राम की अव्यक्तता ओर अवर्णनीयता का बोध कराते हुए कहते हैं कि उस अलख निरंजन को कोई नहीं देखता, संसार मे एकमात्र उसी का आस्तित्व हैं। वह शून्य–स्थूल नहीं, उसकी रूप–रेखा नहीं, सबसे अतीत होने पर भी वह सभी के शरीर में समाया हैं। उसका आदि, मध्य, अंत नहीं। वह कथ्य नहीं, अकथ्य हैं, वह अपरंपार हैं, वह उत्पन्न या नष्ट नहीं होता। वह सृष्टि में रमा हुआ होकर भी उससे भिन्न हैं। जैसे वाघ यंत्रो के ध्वनित करने से नादात्मकता उत्पन्न होती हैं किन्तु उसे बजाने वाला उससे पृथ्क रहता है। अथवा जैसे पुतली नाचती है और उसे सभी देखने हैं किंतु नचाने वाले को कोई नहीं देखता।

"बाजै तंत्र नाद पुनि होई, जो बजावैं सो और कोई।
बाजी नाचैं कौतिग देखा, जो नचावै सो कितहू न देखा।"

राम के स्वरूप की सूक्ष्मता का बोध कराने हेतु कहा गया हैं कि –

"जा के मुँह माथा नहीं, नहीं रूप अरूप।
पुहुप वासते पातरा, ऐसा तत्त अनूप।"

राम के गुण के संदर्भ मे कहता है कि, –

"सात समंद की मसिकरौं, लेखनी सबबनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरिगुण लिख्यान जाइ।"

वह ईश्वर की सर्वत्र व्याप्तता की बात करता हुआ कहता हैं कि,

"मोको कहाँ ढूँढें बंदे मैं तो तेरे पास में।"

कबीर कहते हैं कि राम को अनुभव करने की आवश्यकता हैं। अज्ञानावरण दूर करते ही उसका स्वरूप प्रकट हो जाता है।

"मैं जाण्या हरि दूरि हैं, हरि रहया भरपूरि।
आप पिछाणै बाहिरा, मेड़ा ही थैं दूरि।"

कबीर का समस्त चिंतर अद्वैतवादी दर्शन पर आधारित है। अतःपरमात्मा अर्थात् राम की आत्मा जीव से पृथ्क अस्तित्व नहीं है। आत्मा को परमात्मा में विलीनता का बोध नहीं होता –

"जल में कुंभ–कुंभ में जल हैं, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहि समाना, यह तत कथौं गियानी।"

और कबीर –

"खालिक खलक खलक में खलिक, सब घट रहयो समाई।"

कबीर राम नाम के आश्रय में रहने से ही माया का त्याग संभव मानते हैं –

"माया मुईन मन मुवा, मरि मरि मरि गया शरीर।
आसा त्रिस्वा ना मुई, यों कहि गया कबीर।"

कबीर नाम–स्मरण माया–मोह तथा सांसारिक आसक्तियों से मुक्ति का सहज साधन हैं। –

"कबीर राम रिझाइ ले, मुख अमृतगुन गाइ।
फूटा नग ज्यूं जोड़ि मन, संधे संधि मिलाई।"

कबीर राम–नाम रस के समक्ष सभी रसों के स्वाद को फीका मानते हैं।

"राम रस पाई पारे विसरि गये रस और।
रे मन तेरा को मही, खैंचि लेइ जिनि भार।"

कबीर की भक्ति में नवधा भक्ति दास्यभाव की भक्ति हैं। वे अपने आप को

"मैं गुलाम मोहिबेचि गुंसाई। तनमन धन मेरा राम जी के तांई।"

राम की कसौटी के संदर्भ में कहते हैं –

"खरी कसौटी राम की, खोटा टिकैन कोई।
राम कसौटी सो टिकै, जो जीवन मृतक होइ।"

कबीर के राम रक्षा का कार्य भी करते हैं –

"अब मोहि राम भरोसा तेरा, और कौन का करौं निहोरा।
जकि राम सटीखा साहब भाई, सो क्यूं अनत पुकारन जाई।"

इस तरह कबीर के राम घर–घर में व्याप्त, सब के रक्षक, निर्लिप्त, निराकार, अजन्मा है।

तुलसी के राम

हिंदी के सर्वमान्य मूर्धन्य महाकवि और श्रेष्ठ भक्त प्रवर तुलसीदास ने जिस तन्मयता से रामचरित मानस की रचना की, उसमें सर्वागीण सौंदर्य और लोकोत्तरता अपूर्ण हैं। तुलसी अपने युग के सच्चे प्रतिनिधि कवि थे। तुलसी ने देश की समस्त सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक परिवेश को ध्यान में रखकर ही राम की स्थापना एवं परिकल्पना की हैं। तुलसी के राम स्वयं भगवान है। अपनी संपूर्ण विभूतियों और वैशिष्ट्य से युक्त है। संपूर्ण सृष्टि के सृजक, पालक और संहारक रूप में ही उनको प्राकल्पित प्रतिस्थापित किया हैं।

इस अनुष्ठान में अपने को लगाकर तुलसी ने अपना लक्ष्य बनाया कि किस प्रकार की परिकल्पना से इस देश को उद्‌बोधित और अत्याचार से त्रस्त मानवता को ब्रहम एवं पौरूष प्रदान किया जाये। कौन–सी मानवी परिकल्पना इस युग के विश्रृंखलित मानव समाज को एक सूत्र में श्रृंखलित कर सकेगी।

"यद्यादाचरित श्रेष्ठस्त देवेतरो जनः।
स यत्प्रभाणं कुरूते लोग स्तदनुवर्तते।"

इस दृष्टि और लोक संग्रह की भावना से उन्होंने मर्यादा पुरूषोत्तंम की युगानुरूप अवतारणा करके युगोत्थान की कल्पना प्रस्तुत की। इसके साथ ही अपनी वाणी के प्रभाव से अध्यात्मवादी भारतीय जनजीवन को अनुप्रणित करने का प्रयास किया। राम का स्वांतः सुखाय चत्रित्र गढ़ने में उन्होंने, ''नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्रामायणे निगदितं'' कहने के अतिरिक्त ''क्वाचिदन्यतोऽपि' कहकर अपनी स्थापना पूर्ण कर दी।

तुलसी रामचरित मानस के आरंभ में ही राम का परिचय इस प्रकार से देते हैं कि लोग उनके राम और पूर्वराम सृजकों की सृजित परिकल्पना से किस प्रकार अलग हैं। उनके राम मात्रा दशरथसुत ही नहीं और न ही इतिहास के उदात्त नाय हैं। इनके राम इनकी भक्तिभावन। के ऐकांतिक इष्टदेव हैं –

"यन्मायावशवर्ति विश्व मखिलं ब्रह्मादि देवासुरा।
यत्सत्वाद मृषें व भाति सकलं। रज्जौ। यथा हेम्नर्म।
यत्पादप्लवमेकमेंव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां।
बन्दें हं तमशेष कारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।"

तुलसी ने निज कृति में अनेक स्थलों और प्रसंगों पर रामत्व की सारी साज–सज्जा की हैं। महाकवि कालिदास की शुध्द यथोचित सरणि को नहीं स्वीकारा। उन्हें राम के चरित को एक महान राष्ट्र के व्यापक जन मानस के रग–देशें में भरना अधिक अभीप्सित था। तुलसी ने राम कथा का निरंतर पल्लवन और प्रसार करते हुए एक क्षण को भी अपने इष्टदेव के ईश्वरत्व को विस्मृत नहीं होने दिया। उनकी दृष्टि में राम चरितावली साधन मात्र थी, प्रधान तत्व और साध्य पक्ष था। भक्ति की संशिलष्टि सिध्दि। यथा–

"एक अनीह अरूप अनामा। अज साच्चिदानंद परधामा।।
व्यापक विश्वरूप भगवाना। तेहि धरि देहचरित कृत नाना।।"
"जड़ चेतन जग जीव जत एक राममय जानि।"

"आकर चारि लख चौरासी। जाति जीव जल धल नभ वासी।।
सिया राम मय सब जग जानी। करऊँ प्रणाम जोरि युग पानी।।"

तुलसी के राम अपने समय की हीन, प्रताड़िन, जन जातियों के सहयोग से अपने धुत्र पक्ष पर विजय पाते हैं। तुलसी अपने राम के द्वारा अपने समय–समाज की व्यथाओं, बुराइयों को दूर करना चाहते हैं। यथा –

"प्रभुने प्रभुगन दुख प्लानि, प्रभुहि संभारे राउ।
करते होन कृपान को, कठिन घोर घन घाउ।।"

तुलसी के राम लोकोपासना के राजपथ पर चलने वाले हैं। तुलसी के राम लोक ग्राह्य हैं इसिलिए वे अपनी शक्तिशाली भुजाओं द्वारा अहर्निश रहकर निर्भय विचरता हैं –

"तुलसी जेहि के रघुनाथ से नाव समर्थ सु सेवतरीझत थोरे।
कहा भवपीरपटी तेहि थौं, बिचरैं धरनी तिन सों तिनतोरे।"

तुलसी के राम जन नायक हैं। लोकपालक हैं। तुलसी को जहाँ कही भी अवसर मिला हैं उन्होंने इष्टदेव की इस चारित्रिक विशेषता का गुणगाण किया हैं, और लोकभावना विषयपरक प्रसंग चुन–चुनकर प्रस्तुत किये हैं। यथा –

"जाऊँ कहाँ तजि चरण तिहारे।
निदरिगनी आदर गरीब पर करत कृपा अधिकारे।
कौन–देव राइ बिरदहित, हठि हठि दीन उधारे।"

राम ने अपनी व्यक्त लोकलीला में तो उपेक्षितों और अभावग्रस्तों का घोषण किया है, जमनियंता के अव्यक्त रूप में भी उन्होंने गरीबों के हित राक्षार्थ कहा –

"मनि मानिक महँगे किये, सहँगें जल तृन नाज।
तुलसी एते जानिये, राम गरीब नेवाज।"

तुलसी के राम का रुप लोक रंजक भी है। राम के रुप, शील और स्वभाव का तुलसी ने आद्योपांत वर्णन किया हैं। शैशवावस्था में पालने में तथा पिताकी गोद में उनका लोक मोहक सौंदर्य तथा चेष्टायें नागरिकों को मुग्ध करती हैं। यथा –

"खेलत बसंत राजाधिराज। देखन नथ कौतुक सुर समाज।
सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ। झोलिन्ह अबीर पिचकारि हाथ।
नर–नारि परस्पर गारि देत, सुनि हंसहि राम भाइन समेत।"

तुलसी के राम की संस्थापना, परिकल्पना लोकधर्म के लिए हुई हैं। तुलसी ने अपनी कृतियों में रामकथा के प्रमुख चरित्रों के आचार, व्यवहार तथा उक्तियों के द्वारा लोकधर्म का नैसार्गिक

स्वरूप प्रस्तुत कराया है। आहिंसा, करूणा, परोपकार, वृध्दों की सेवा, मर्यादा, निष्ठा, जन्मभूमि–प्रेम, दुष्टों का दमन, अबला की रक्षा, खलों हेतू अहिंसा भाव आदि में यह वर्णित हैं।

संदर्भ –

हिंदी साहित्य – युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार धर्मा
कबीर ग्रंथावली – डॉ. श्यामसुंदर दास
हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ.रामचंद्र शुक्त
हिंदी भक्तिकाव्य – डॉ. मीरा गौतम
हिंदी – नेट मास्टर गाइड – अनिलकुमार सोलंकी

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com